प्रकाशित: 29 नवबंर 2018 को दैनिक जागरण में प्रकाशित-

गोत्र ऐसा राजनीतिक दलदल है जिससे राहुल जितना निकलेंगे उतना धंसते चले जाएंगे

प्रदीप सिंह

कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी और उनकी पार्टी एक अजीब तरह के संकट से गुजर रही है। इस तरह के संकट यों तो कांग्रेस के लिए कोई नई बात नहीं है, लेकिन लोकसभा चुनाव से कुछ महीने पहले ऐसा होना चिंता को बढ़ाने वाला है। कांग्रेस मोदी सरकार के खिलाफ जिस भी मुद्दे को बड़े मुद्दे के रूप में पेश करना चाहती है वह तो बन नहीं पाता, उलटे भाजपा को फायदा पहुंचाने वाले मुद्दे विमर्श के केंद्र में आ जाते हैं। पिछले कई महीने से राहुल गांधी राफेल विमान सौदे को मोदी सरकार के बोफोर्स के रूप में पेश करने की कोशिश कर रहे है, लेकिन जनता के बीच कोई हलचल नहीं हो रही थी। राहुल गांधी शायद यह भूल रहे हैं कि राफेल सौदा न तो बोफोर्स है और न वह वीपी सिंह है।

इन दिनों राहुल गांधी और कांग्रेस की राजनीतिक गाड़ी गोत्र के गड्ढ़े में फंसी दिख रही है। इसे खुद राहुल ने फंसाया है। भाजपा ने यह पूछ कर

एक जाल फेंका था कि अगर राहुल गांधी जनेऊधारी ब्राह्मण हैं तो फिर उनका गोत्र क्या है? राहुल और उनके सलाहकार खुली आंखों से इस जाल में फंस गए। बीते दिनों राहुल राजस्थान के पुष्कर में पूजा करने गए। वहां पूजा कराने वाले पंडितजी को उन्होंने बताया कि वह कौल ब्राहम्ण है और उनका गोत्र दत्तात्रेय है। इसके बाद पंडित जी की ओर से यह बताया गया कि मोतीलाल नेहरू का गोत्र यही था। अब सवाल उठ रहा है कि आखिर नेहरू का गोत्र राहुल गांधी का गोत्र कैसे हो सकता है? नेहरू तो राहुल के पिता राजीव गांधी के नाना थे। राजीव के पिता फिरोज गांधी पारसी थे। नेहरू गांधी परिवार ज्योतिषीय गणना का बहुत ध्यान रखता था।

राजीव गांधी के जन्म की खबर जवाहर लाल नेहरू को जेल में मिली थी। अहमदाबाद फोर्ट जेल से उन्होंने 29 अगस्त 1944 को इंदिरा गांधी और अपनी बहन कृष्णा हथीसिंह को पत्र लिखा कि किसी जानकार से कुंडली बनवा लें। इतना ही नहीं उन्होंने यह भी लिखा कि जन्म का समय सोलर टाइम के मुताबिक होना चाहिए। मशहूर ज्योतिषी शास्त्री केएन राव ने नेहरू-गांधी परिवार पर अपनी पुस्तक में लिखा है कि नेहरू की शादी कम पढ़ी लिखी और अपेक्षाकृत कम हैसियत वाले परिवार की कमला से इसलिए हुई कि उनकी कुंडली में योग था कि उनकी तीन पीढ़ियों को राजयोग मिलेगा। इस बात का कोई प्रमाण तो नहीं है, लेकिन संभव है कि आगे की राजनीतिक संभावना के मद्देनजर

ही इंदिरा गांधी ने अपने दोनों बच्चों को औपचारिक रूप से अपने पति के धर्म में दीक्षित नहीं किया।

राहुल गांधी के सलाहकार थोड़ी भी समझदारी दिखाते तो उनसे कहलवा सकते थे कि वे धर्म और जाति के पचड़े में नहीं पडऩा चाहते। उनके लिए उनकी जाति और गोत्र से ज्यादा बड़ा मुद्दा देश की समस्याएं हैं। उनसे निबटना उनकी प्राथमिकता है। उनके माता-पिता या दादा-दादी का चुनाव उनके वश में नहीं था। वह जो है जैसे हैं उन्हें उसी रूप में स्वीकार किया जाए। उन्हें जाति-धर्म के विवाद में न घसीटा जाए। राजनीतिक अनुभव और अनुभवहीनता का फर्क देखिए कि बुधवार को मध्य प्रदेश में मतदान के दिन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से भी गोत्र की राजनीति के बारे में सवाल पूछा गया। तो उनका जवाब था, 'हम सब भारत के लाल, भेदभाव का कहां सवाल!'

समस्या यह है कि कांग्रेस सेल्फ गोल करने में पारंगत हो गई है। पहले शिवभक्तफिर जनेऊधारी ब्राह्माण से जो सिलसिला शुरू हुआ था वह गोत्र तक पहुंच गया है। ऐसा दावा करने वाले जानकारों की कमी नहीं है कि उनका जो गोत्र बताया जा रहा है वह शास्त्रोक्त गोत्रों में शुमार ही नहीं है। इन जानकारों के मुताबिक हिंदू धर्म शास्त्रों में हिंदुओं को ऋषियों की संतान बताया गया है। ऐसे नौ ऋषि हैं जिनके नाम से गोत्र हैं। दत्तात्रेय नाम का गोत्र इसमें नहीं है। हिंदू धर्म में जिनका गोत्र न हो उनको भी गोत्र नाम देने की व्यवस्था है, लेकिन इस बहस का कोई अंत

नहीं है। धर्म, जाति फिर गोत्र-यह एक ऐसा राजनीतिक दलदल है जिससे राहुल गांधी जितना निकलने की कोशिश करेंगे उतना ही धंसते जाएंगे। जिसने भी उन्हें यह सब करने की सलाह दी वह और कुछ भी हो, उनका हितैषी तो नहीं ही है।

एक तरफ राहुल गांधी ऐसे निजी मुद्दों में खुद को फंसा रहे हैं तो दूसरी ओर उनकी पार्टी के नेता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के माता-पिता और जाति का मुद्दा उठाकर भाजपा को हमलावर होने का मौका दे रहे हैं। नरेंद्र मोदी ऐसा अवसर कहां चूकने वाले। कांग्रेस नेताओं के बयानों से लगता है कि पार्टी में फ्री फ़ॉर ऑल है।

अब करतारपुर गलियारे का ही मामला देखिए। पंजाब के मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह जनभावना के अनुरूप पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष जनरल बाजवा को चेतावनी दे रहे हैं कि भारत को कमजोर न समझें। वहीं उन्हीं की कैबिनेट के सदस्य नवजोत सिंह सिद्धू बाजवा को सैल्यूट करने की बात कर रहे हैं और पाकिस्तान को अपना दूसरा घर बता रहे हैं। अब सिद्धू किसकी भावना का ध्यान रखकर बोल रहे हैं, यह कांग्रेस ही जाने।

इस सबके बीच प्रधानमंत्री मोदी ने कांग्रेस के खिलाफ एक नई रणनीति का संकेत दिया है। तेलंगाना की एक चुनावी सभा में उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में सपा, बसपा और पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस, वाम दलों से कोई समस्या नहीं है। समस्या कांग्रेस है। इसे उखाड़ फेंकना है।

इसके जरिये मोदी की कोशिश है कि यदि विपक्षी दलों का महागठबंधन बनने की नौबत आती है तो उसमें कांग्रेस को शामिल करने से पहले क्षेत्रीय दल कई बार सोचें। संदेश यह भी है कि भाजपा को क्षेत्रीय दलों के साथ काम करने में कोई समस्या नहीं है। प्रधानमंत्री की इस बात का आज कोई संदर्भ समझना मुश्किल है, लेकिन यदि 11 दिसंबर को पांच राज्यों के चुनाव नतीजे कांग्रेस के अनुकूल नहीं रहते तो इसका संदर्भ और अर्थ, दोनों अहम हो जाएंगे। मोदी उस समय की पेशबंदी कर रहे हैं। प्रधानमंत्री की इस बात से यह संकेत भी मिलता है कि उन्हें भाजपा के अच्छा करने की उम्मीद है।

पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के नतीजों का लोकसभा चुनाव के नतीजे पर नहीं, बल्कि उसके प्रचार अभियान और राजनीतिक ध्रुवीकरण पर असर पडऩा तय है। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री और तेलुगु देसम पार्टी के प्रमुख चंद्रबाबू नायडू की नई पहल पर विपक्षी एकता की कोशिश के लिए 22 नवंबर को दिल्ली में होने वाली बैठक ममता बनर्जी ने इसीलिए टलवा दी। ममता बनर्जी ही नहीं, दूसरे क्षेत्रीय दल भी देखना चाहते हैं कि भाजपा से सीधे मुकाबले और दो राज्यों में 15 साल की एंटी इनकंबेंसी के खिलाफ राहुल गांधी का प्रदर्शन कैसा रहता है।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं वरिष्ठ स्तंभकार हैं)